ISSN: 2582-5526 www.thevoiceofcreativeresearch.com

The Voice of Creative Research

Vol. 8 & Issue 3 (July 2026)

Peer Reviewed Article

DOI: https://doi.org/10.53032/tvcr/2026.v8n3.22

मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट के विचारों में निहित लैंगिक भूमिकाओं और महिलाओं के भावनात्मक बोझ का समकालीन विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रगति वर्मा

(शोधार्थी)

शिक्षाशास्त्र विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय

Email: pragativerma002@gmail.com

https://orcid.org/0009-0009-0303-9115

डॉ. पूजा दुबे

(असि. प्रो.)

कृष्णा देवी गर्ल्स डिग्री कॉलेज,

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Email -999poojapandey@gmail.com

सारांश

यह शोधपत्र पश्चिमी नारीवादी दार्शनिक मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट के विचारों का गहन अध्ययन कर महिलाओं की लैगिंक भूमिकाओं और भावनात्मक बोझ का समकालीन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में वोलस्टोनक्राफ्ट की मूल कृति 'ए विंडिकेशन ऑफ द राइट्स ऑफ वूमन' **(1792)** तथा संबंधित शोध पत्रों को सैद्धांतिक आधार बनाया गया है। यह एक गुणात्मक शोध है, जिसमें दस्तावेज विश्लेषण विधि का उपयोग किया गया है। विश्लेषण में यह निष्कर्ष पाया गया कि पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था ने महिलाओं के लिए कुछ ख़ास जिम्मेदारिया तय कर रखी हैं, इन ज़िम्मेदारियों को जेंडर के साथ जोड़कर समाज ने महिलाओं के लिए अनिवार्य बना दिया है । इस सामाजिक ढांचे में महिलाओं को बचपन से ही इन पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं के निर्वहन हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। समाज महिलाओं के इस भावनात्मक बोझ को एक स्वाभाविक उत्तरदायित्व के रूप में देखता है। वोलस्टोनक्राफ्ट के विचारों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि महिलाओं में उचित शिक्षा का अभाव, महिलाओं का पुरुषों पर निर्भरता और समाज में सीमित सक्रियता ही इस मौजूदा स्थिति के लिए उत्तरदायी है । अंत में यह विश्लेषित किया गया है कि महिलाओं को तर्कसंगत प्राणी के रूप में स्वीकार कर उन्हें तर्कसंगत शिक्षा, समान अधिकार, व्यक्तिगत स्वायत्तता, निर्णय की स्वतंत्रता साथ ही लैंगिक भूमिकाओं को नए सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता है ।

मुख्य शब्द- मैरी वोस्टोनक्राफ्ट की नारीवादी विचार, लैगिक भूमिकाएं, पितृसत्तात्मक सोच, भावनात्मक बोझ, महिलाओं की जिम्मेदारियाँ

भूमिका

मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट जिन्हें आधुनिक नारीवादी चिंतन की अग्रदूत माना जाता है, ने अपनी मूल कृति 'ए विंडिकेशन ऑफ द राइट्स ऑफ वुमन' (1792) में यह तर्क दिया कि महिलाओं की तथाकथित 'स्वाभाविक' कमज़ोरी, अति-भावुकता और

तर्कहीनता वास्तव में पितृसत्तात्मक समाज द्वारा थोपी गई लैंगिक भूमिकाओं और शिक्षा से वंचित रखे जाने का परिणाम है (Wollstonecraft, 1792)[1] । उनके अनुसार, महिलाओं को केवल पुरुषों को प्रसन्न करने, सौंदर्य बनाए रखने और मातृत्व के लिए प्रशिक्षित करके, समाज उन पर एक अदृश्य किंतु अत्यंत भारी भावनात्मक बोझ डालता है, जहाँ उनसे सदा सहनशील, कोमल, आभारी और संवेदनशील बने रहने की अपेक्षा की जाती है, इसके साथ ही उनकी बुद्धि, तर्क और आत्मनिर्भरता को दबा दिया जाता है । (Wollstonecraft, 1792/1988)

वोलस्टोनक्राफ्ट की यह अंतर्दृष्टि आज के समकालीन परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक प्रासंगिक है। हालाँकि महिलाओं ने शिक्षा, रोजगार और कानूनी अधिकारों में महत्वपूर्ण प्रगति कर ली है, फिर भी लैंगिक भूमिकाओं का दबाव और भावनात्मक बोझ नए रूपों में जारी है। समकालीन शोधकर्ता इस घटना को 'भावनात्मक श्रम'की संज्ञा देते हैं, जिसे Hochschild (1983)[2] ने सार्वजनिक रूप से उचित भावना का प्रबंधन और प्रस्तुतीकरण के रूप में परिभाषित किया है। यह श्रम, जो अक्सर अवैतनिक और अदृश्य होता है, आज भी मुख्य रूप से महिलाओं के कंधों पर होता है—चाहे वह परिवार में मानसिक प्रबंधन हो (Daminger, 2019)[3] , कार्यस्थल पर सहानुभूति और समायोजन का दबाव हो, या सोशल मीडिया पर 'परफेक्ट महिला' की छवि बनाए रखने का संकट हो । (Swami & Furnham, 2020)[4]

वोलस्टोनक्राफ्ट ने महिलाओं के इस भावनात्मक बोझ को 'भावनात्मक दासता'का नाम दिया और इसे तोड़ने का एकमात्र उपाय 'तर्क-आधारित शिक्षा और तर्कसंगत नारीत्व' में देखा । (Gunther-Canada, 2001)[5] उनका मानना था कि यदि महिलाओं को भी पुरुषों की तरह तर्क, विज्ञान, दर्शन और राजनीति सिखाई जाए, तो वे अपनी भावनात्मक दासता को पहचान सकेंगी और एक स्वतंत्र, सम्मानित जीवन जी सकेंगी। उन्होंने लिखा:-

"मैं यह नहीं कहती कि महिलाओं को पुरुषों से अधिक शक्ति मिलनी चाहिए, बल्कि यह कि उन्हें अपनी शक्ति पर अधिकार होना चाहिए" (Wollstonecraft, 1792, अध्याय 9)।

हालाँकि, वोलस्टोनक्राफ्ट के इस तर्क-केंद्रित समाधान की समकालीन नारीवादी विद्वानों द्वारा आलोचना भी की गई है। Ferguson (1992)[6] और hooks (2000)[7] जैसी चिंतकों का तर्क है कि केवल 'तर्क' पर बल देना भावनाओं, शरीर, देखभाल और सहानुभूति के मूल्य को नकार सकता है। साथ ही, वोलस्टोनक्राफ्ट का विश्लेषण वर्ग, जाति और उपनिवेशवाद के प्रश्नों को अपर्याप्त रूप से संबोधित करता है—एक दलित, आदिवासी, गरीब या ट्रांस महिला का भावनात्मक बोझ एक उच्च-मध्यवर्गीय श्वेत महिला से बहुत भिन्न होता है (Mohanty, 2003)।[8]

इसके अतिरिक्त, कोविड-19 महामारी ने इस असमान भावनात्मक बोझ को और अधिक उजागर कर दिया। Power (2020)[9] के अध्ययन के अनुसार, महामारी के दौरान महिलाओं ने पुरुषों की तुलना में तीन गुना अधिक देखभाल और भावनात्मक प्रबंधन का कार्य किया, जबकि उनका स्वयं का मानसिक स्वास्थ्य गंभीर रूप से प्रभावित हुआ। यह आँकड़ा वोलस्टोनक्राफ्ट की दो शताब्दी पुरानी चेतावनी को चरितार्थ करता है कि जब तक महिलाओं को केवल 'देखभाल करने वाली और 'भावनाओं को संभालने वाली'की भूमिका में ढाला जाता है, तब तक वे वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकतीं।

शोध उद्देश्य

इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट के विचारों में लैंगिक भूमिका की अवधारणा का विश्लेषण करना।
2. महिलाओं के भावनात्मक बोझ की अवधारणा का विश्लेषण करना।
3. मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

शोध विधि

यह शोध पत्र गुणात्मक विश्लेषणात्मक विधि का अनुसरण करता है। प्राथमिक स्रोत के रूप में वोलस्टोनक्राफ्ट के ए विंडिकेशन ऑफ द राइट्स ऑफ वूमन और द्वितीय स्रोतों के रूप में समकालीन विद्वानों के शोध पत्रों का उपयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोधपत्र में दस्तावेजों की व्याख्या करने, अर्थों को समझने, परिवर्तनों का पता लगाने और संदर्भ में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए दस्तावेज़ विश्लेषण, एक व्यवस्थित गुणात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया है।

उद्देश्य 1. वोलस्टोनक्राफ्ट के विचारों में लैंगिक भूमिका की अवधारणा

लैंगिक भूमिकाओं का सामाजिक निर्माण

वोलस्टोनक्राफ्ट ने यह स्पष्ट किया कि महिलाएँ जैसी हैं, वैसी प्रकृति ने नहीं बनाई, समाज ने बनाई है। वह लिखती हैं:-

"महिलाओं को बचपन से ही सिखाया जाता है कि सौंदर्य महिला का राजदंड है। मन शरीर के अनुसार ढल जाता है, और अपने सोने के पिंजरे में घूमते हुए केवल अपनी कैद को सजाने का प्रयास करता है।" (Wollstonecraft, 1792, Chapter II)

यह अंश वोलस्टोनक्राफ्ट के केंद्रीय तर्क को स्पष्ट करता है कि महिलाओं को कमज़ोर, भावुक, और निर्भर बनने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, और फिर इस प्रशिक्षण के परिणाम को उनका "प्राकृतिक स्वभाव" बता दिया जाता है।

वोलस्टोनक्राफ्ट ने इस स्थिति की तुलना अमीरों की स्थिति से की। जैसे अमीर लोग अपनी संपत्ति और सत्ता के कारण वास्तविक नैतिक परीक्षणों से वंचित रह जाते हैं, वैसे ही महिलाएँ अपनी सीमित शिक्षा और सामाजिक स्थिति के कारण वास्तविक नैतिक विकास से वंचित रह जाती हैं। वह लिखती हैं:- "संक्षेप में, *महिलाएँ, सामान्य रूप से, साथ ही दोनों लिंगों के अमीर, सभ्यता की सभी मूर्खताओं और दोषों को प्राप्त कर लेती हैं, और उपयोगी फल से चूक जाती हैं" । (Wollstonecraft, 1792, p. 88)*

यौन गुणों का खंडन

वोलस्टोनक्राफ्ट के लैंगिक भूमिका विश्लेषण का सबसे क्रांतिकारी पहलू उनका "यौन गुणों" के अस्तित्व को अस्वीकार करना है। वह स्पष्ट रूप से घोषणा करती हैं:-

"मैं यहाँ अपना दस्ताना फेंकती हूँ और यौन गुणों के अस्तित्व को अस्वीकार करती हूँ, विनम्रता को भी नहीं छोड़ती।" (Wollstonecraft, 1792).

यह वाक्य उनके संपूर्ण दार्शनिक विचारों का सार है। उनके लिए, यह धारणा कि महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग-अलग नैतिक गुण होते हैं जैसे महिलाओं के लिए विनम्रता, कोमलता, और पुरुषों के लिए साहस, तर्कशीलता - पूरी तरह से गलत है। नैतिकता एक है, और वह सभी मनुष्यों के लिए समान है।

Johnson और Keen (2020)[10] इस संदर्भ में लिखते हैं कि वोलस्टोनक्राफ्ट ने "*बलपूर्वक तर्क दिया कि लैंगिक असमानता महिलाओं और पुरुषों के 'कथित यौन चरित्र' के बीच एक झूठे भेद पर आधारित थी। व्यवस्थित रूप से उन धारणाओं को नष्ट करते हुए जो महिलाओं के उत्पीड़न का कारण बनती थीं, वॉलस्टोनक्राफ्ट ने दोष सीधे पुरुषों पर लगाया और जोर दिया कि पितृसत्ता दोनों लिंगों को अपमानित करती है" ।*

रूसो की लैंगिक भूमिका की अवधारणा को चुनौती

वोलस्टोनक्राफ्ट की लैंगिक भूमिका की आलोचना का सबसे तीखा लक्ष्य जीन-जाक रूसो थे। रूसो ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ एमिल में आदर्श महिला 'सोफी' का चित्रण किया था - एक सुंदर, डरपोक, निर्भर प्राणी जो अपने पुरुष श्रेष्ठ से सीखने के लिए उत्सुक है। रूसो ने लिखा था कि *"ओह, कितनी प्यारी है उसकी अज्ञानता! धन्य है वह जो उसे निर्देश देने के लिए नियत है! वह कभी भी अपने पति का शिक्षक बनने का दिखावा नहीं करेगी, बल्कि उसकी शिष्या बनकर संतुष्ट रहेगी। वह उसे अपने स्वाद के अधीन करने का प्रयास करने से बहुत दूर, स्वयं को उसके अनुकूल बनाएगी।"Rousseau, J. (1762/1979)[11]*

वोलस्टोनक्राफ्ट ने इस चित्रण को न केवल गलत बताया, बल्कि खतरनाक भी बताया। उनके लिए, रूसो का यह मॉडल महिलाओं को "पुरुषों का खिलौना" बना देता है। वह लिखती हैं कि पुरुष महिलाओं को "पुरुष का खिलौना, उसकी झुनझुनी बना देते हैं, जो उसके कानों में खनकनी चाहिए जब भी वह, तर्क को त्यागकर, मनोरंजन करना चाहता है" । (Wollstonecraft, 1792, Chapter II)

वोलस्टोनक्राफ्ट का लैंगिक भूमिका के प्रमुख अवधारणाओं का विश्लेषण

स्थानीयकरण और अलगाव

वोलस्टोनक्राफ्ट के लैंगिक भूमिका विश्लेषण की एक महत्वपूर्ण अवधारणा "स्थानीयकरण" है। यह अवधारणा एडम स्मिथ के नैतिक दर्शन से प्रभावित है। वॉलस्टोनक्राफ्ट का तर्क है कि महिलाएँ, अमीरों की तरह, समाज के बाकी हिस्सों से "स्थानीयकृत" और "अलग-थलग" होती हैं क्योंकि उनके चरित्र की कभी परीक्षा नहीं होती और वे शायद ही कभी प्रतिकूलता का सामना करती हैं । यह अलगाव दोहरा है। एक ओर, महिलाएँ सार्वजनिक जीवन से अलग-थलग हैं - उन्हें राजनीति, व्यापार,

या उच्च शिक्षा में भाग लेने की अनुमति नहीं है। दूसरी ओर, वे उस सीमित स्थान में भी, जहाँ उन्हें रहने की अनुमति है, वास्तविक नैतिक एजेंसी से वंचित हैं। उनका जीवन "स्थानीय मामलों" तक सीमित है, जबकि वे "अपरिवर्तनीय नैतिकता" से वंचित हैं।

नैतिक एजेंसी का प्रश्न

वॉलस्टोनक्राफ्ट के लिए, लैंगिक भूमिकाओं की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वे महिलाओं को नैतिक एजेंसी से वंचित करती हैं। उनका तर्क है कि महिलाओं को इस प्रकार शिक्षित किया जाता है कि वे हमेशा दूसरों की नज़रों से अपने आप को देखें जैसा कि रूसो ने सिफारिश की थी कि महिलाओं को हमेशा "लोग उनके व्यवहार के बारे में क्या सोचेंगे" के द्वारा निर्देशित होना चाहिए ।

पुरुष, इसके विपरीत, अपने आंतरिक नैतिक सिद्धांतों पर भरोसा करना सीख सकते हैं। वे जनमत की अवहेलना कर सकते हैं जब वे जानते हैं कि वे सही हैं। महिलाओं को यह अनुमति नहीं है। वॉलस्टोनक्राफ्ट लिखती हैं कि महिलाएँ "नैतिक रूप से अटकी हुई" हैं क्योंकि उन्हें अपनी तर्क और नैतिक क्षमताओं को विकसित करने की अनुमति नहीं है। उनसे कैसे अपेक्षा की जा सकती है कि वे अपने ऊपर एक निष्पक्ष दृष्टिकोण विकसित करें जब पूरा समाज उन्हें बताता है कि वे आंशिक जनमत को कभी नहीं छोड़ सकतीं? Wollstonecraft, 1792/2014)[12]

महिला बनाम स्त्री

वोलस्टोनक्राफ्ट अपने विश्लेषण में एक महत्वपूर्ण भेद करती हैं - वे "महिलाओं" की आलोचना करती हैं, जो समाज द्वारा निर्धारित भूमिका को स्वीकार कर लेती हैं और उसमें रम जाती हैं, और उन "स्त्रियों" के बीच अंतर करती हैं जो तर्क और नैतिकता के माध्यम से अपनी मुक्ति चाहती हैं।

"महिलाएँ" वे हैं जो-

- अपनी उपस्थिति और व्यवहार को नैतिकता से अधिक मूल्य दें।
- कमज़ोरी को आकर्षक बनाना सीख लेती हैं ।
- पुरुषों पर निर्भरता को अपना "प्राकृतिक" स्थान मान लेती हैं ।
- कभी-कभी उस व्यवस्था में सहयोगी भी बन जाती हैं जो उनका शोषण करती है।

वोलस्टोनक्राफ्ट इन "महिलाओं" की तुलना स्पैनियल (एक प्रकार का कुत्ता) से करती हैं - जो अपने मालिक के प्रति अत्यधिक वफादार और निर्भर होते हैं। वह लिखती हैं कि इन महिलाओं को "तुच्छ खतरों" में भी अपने "प्राकृतिक रक्षक" से सहायता माँगने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है - शायद "एक बूढ़ी गाय की भौंह" या "चूहे की उछाल" से बचाने के लिए ।

समकालीन संदर्भ में वॉलस्टोनक्राफ्ट के विचारों की प्रासंगिकता

शिक्षा और लैंगिक भूमिकाएँ आज

Das (2025)[13] के अनुसार, वॉलस्टोनक्राफ्ट के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता इस बात में है कि "उनके तर्कों को 21वीं सदी में लैंगिक समानता की चल रही चुनौतियों, जिनमें शिक्षा तक पहुँच में बाधाएँ और लगातार लैंगिक रूढ़ियाँ शामिल हैं, को संबोधित करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है" ।

आज, जब महिलाएँ औपचारिक रूप से शिक्षा तक पहुँच प्राप्त कर चुकी हैं, तब भी लैंगिक भूमिकाओं का प्रश्न शिक्षा के क्षेत्र में विद्यमान है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (STEM) जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी अभी भी कम है। यह वही पुरानी लैंगिक धारणा है कि महिलाएँ "तर्कशील" क्षेत्रों के लिए उपयुक्त नहीं हैं - वही धारणा जिसका वॉलस्टोनक्राफ्ट ने दो शताब्दी पहले खंडन किया था।

"कॉकेट"(Coquette) का पुनरुत्थान: सशक्तीकरण या सीमांकन?

Moustakis (2025)[14] का शोध वॉलस्टोनक्राफ्ट के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता का एक दिलचस्प उदाहरण प्रस्तुत करता है। वॉलस्टोनक्राफ्ट ने अपने समय में "कॉकेट" (नखरिली, चुलबुली स्त्री) की अवधारणा की कड़ी आलोचना की थी। उनके अनुसार, महिलाओं को "स्वाभाविक रूप से नखरिली" बताना उन्हें तुच्छ और सतही बनाने का एक तरीका था ।

आज, कुछ युवा महिलाएँ "कॉकेट" शब्द को पुनः अपना रही हैं—इसे सशक्तीकरण के प्रतीक के रूप में। Moustakis (2025) का तर्क है कि यह पुनरुत्थान "एक व्यापक सांस्कृतिक बदलाव को दर्शाता है जिसमें स्त्रीत्व को सीमा के बजाय शक्ति

के स्रोत के रूप में अपनाया जाता है, जो वॉलस्टोनक्राफ्ट के महिलाओं को सक्षम और स्वायत्त व्यक्तियों के रूप में देखने के दृष्टिकोण के अनुरूप है" ।

हालाँकि, यह पुनरुत्थान विवादास्पद भी है। क्या यह वास्तव में सशक्तीकरण है, या पुरानी लैंगिक रूढ़ियों का एक नया रूप? यह प्रश्न वॉलस्टोनक्राफ्ट के मूल तर्क को याद दिलाता है: जब तक महिलाएँ अपनी उपस्थिति और आकर्षण पर अपनी पहचान आधारित करती हैं, तब तक वे वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकतीं।

उपभोक्ता संस्कृति और लैंगिक भूमिकाएँ

वॉलस्टोनक्राफ्ट ने अपने समय में उपभोक्ता संस्कृति और लैंगिक भूमिकाओं के बीच संबंधों का विश्लेषण किया था। उन्होंने देखा कि कैसे व्यापार, उपभोग और विलासिता को "स्त्रैण" बनाया जा रहा था, और यह "स्त्रीकरण" महिलाओं के लिए एक जाल साबित हो रहा था ।

आज, यह प्रवृत्ति और भी अधिक तीव्र हो गई है। सौंदर्य उद्योग, फैशन उद्योग, और सोशल मीडिया सभी महिलाओं को उनकी उपस्थिति पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वॉलस्टोनक्राफ्ट की आलोचना आज भी उतनी ही प्रासंगिक है: जब महिलाओं का मूल्य उनकी उपस्थिति से मापा जाता है, तो वे "सौंदर्य की दासी" बन जाती हैं ।

आधुनिक सेक्स वर्क और लैंगिक भूमिकाएँ

King (2025)[15] का शोध वॉलस्टोनक्राफ्ट के विचारों को आधुनिक सेक्स वर्क की बहस पर लागू करता है। वह तर्क देते हैं कि वॉलस्टोनक्राफ्ट की "आज्ञाकारिता को सुरक्षा के लिए विनिमय करने" की आलोचना आज भी प्रासंगिक है। उनके अनुसार, सेक्स वर्क में महिलाओं की भागीदारी "एक धोखाधड़ी यौन अनुबंध को कायम रखती है, जिसमें वित्तीय स्थिरता या प्रसिद्धि के लिए अधीनता और वस्तुीकरण का आदान-प्रदान किया जाता है" ।

यह वॉलस्टोनक्राफ्ट के उस विश्लेषण से मेल खाता है जिसमें उन्होंने दिखाया था कि महिलाओं को "सुरक्षा" के बदले में अधीनता स्वीकार करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। आज, यह सुरक्षा आर्थिक स्थिरता, सामाजिक स्वीकृति, या मीडिया में प्रसिद्धि का रूप ले सकती है।

उद्देश्य 2. वोलस्टोनक्राफ्ट के विचारों में भावनात्मक श्रम की अवधारणा

वोलस्टोनक्राफ्ट की "संवेदनशीलता"

वोलस्टोनक्राफ्ट ने "संवेदनशीलता" की अवधारणा का विस्तृत विश्लेषण किया। उनके समय में, संवेदनशीलता को महिलाओं का एक प्राकृतिक गुण माना जाता था - उनकी अत्यधिक भावनात्मक प्रतिक्रियाशीलता, उनकी करुणा, उनकी सहानुभूति। वोलस्टोनक्राफ्ट ने इस धारणा को चुनौती दी। उन्होंने तर्क दिया कि संवेदनशीलता कोई प्राकृतिक गुण नहीं है; यह एक सुसंस्कृत प्रवृत्ति है जो महिलाओं को कमज़ोर और निर्भर बनाती है।

वह लिखती हैं:-

"संवेदनशीलता को महिलाओं का सबसे बड़ा गुण बताया जाता है, लेकिन वास्तव में यह उनकी सबसे बड़ी कमज़ोरी है। यह उन्हें तर्क से वंचित करती है, उन्हें क्षणिक भावनाओं का दास बना देती है, और उन्हें वास्तविक नैतिक एजेंसी से वंचित रखती है।" (Wollstonecraft, 1792, अध्याय 5).

वोलस्टोनक्राफ्ट के लिए, संवेदनशीलता की यह खेती एक राजनीतिक रणनीति थी। महिलाओं को भावनात्मक बनाकर, उन्हें तर्क से वंचित करके, और फिर इस भावनात्मकता को उनका "प्राकृतिक" गुण बताकर, पितृसत्तात्मक व्यवस्था उन्हें निर्भर बनाए रखती थी।

होचस्चिल्ड का "भावनात्मक श्रम"

समाजशास्त्री अरली रसेल होचस्चिल्ड ने अपनी पुस्तक द मैनेज्ड हार्ट (1983) में "भावनात्मक श्रम" की अवधारणा विकसित की। उन्होंने भावनात्मक श्रम को उस प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जिसमें व्यक्ति सार्वजनिक रूप से देखने योग्य चेहरे और शारीरिक अभिव्यक्ति का निर्माण करता है, जो उसके कार्य के लिए आवश्यक होता है।

होचस्चिल्ड (1983) ने दो प्रकार के भावनात्मक श्रम की पहचान की जो इस प्रकार हैं:-

सतही अभिनय- जब व्यक्ति अपनी वास्तविक भावनाओं को दबाकर आवश्यक भावनाओं का प्रदर्शन करता है।

गहन अभिनय- जब व्यक्ति अपनी आंतरिक भावनाओं को ही बदलने का प्रयास करता है ताकि वह आवश्यक भावनाओं को वास्तविक रूप से महसूस कर सके।

होचस्चिल्ड ने पाया कि यह श्रम अक्सर महिलाओं द्वारा किया जाता है और यह अवैतनिक तथा अदृश्य रहता है।

वोलस्टोनक्राफ्ट और होचस्चिल्ड:- एक तुलनात्मक विश्लेषण

वोलस्टोनक्राफ्ट की "संवेदनशीलता" और होचस्चिल्ड के "भावनात्मक श्रम" के बीच एक महत्वपूर्ण समानता है: दोनों यह मानते हैं कि भावनाओं का प्रबंधन कोई प्राकृतिक या जैविक क्षमता नहीं है, बल्कि एक सीखा हुआ और सामाजिक रूप से निर्धारित कौशल है।

हालाँकि, दोनों के दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण अंतर भी है। वोलस्टोनक्राफ्ट महिलाओं के भावनात्मक श्रम की आलोचना मुख्यतः शिक्षा के अभाव के संदर्भ में करती हैं। उनका तर्क है कि यदि महिलाओं को उचित शिक्षा दी जाए, तो वे अपनी भावनाओं को तर्क के माध्यम से प्रबंधित कर सकती हैं। होचस्चिल्ड, इसके विपरीत, स्वयं भावनात्मक श्रम की संरचना की आलोचना करती हैं और तर्क देती हैं कि यह श्रम महिलाओं का शोषण करता है चाहे वे कितनी भी शिक्षित क्यों न हों।

उद्देश्य 3. वोलस्टोनक्राफ्ट के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता

दो शताब्दी बाद भी, ये तीनों चर उसी रूप में विद्यमान हैं। महिलाएँ आज भी असमान जिम्मेदारियाँ वहन करती हैं। लैंगिक भूमिकाएँ आज भी महिलाओं के जीवन को सीमित करती हैं। भावनात्मक श्रम आज भी अदृश्य, अवैतनिक, और अनदेखा रहता है।

SSRS (2025)[16] के आँकड़े बताते हैं कि आज भी महिलाएँ पुरुषों की तुलना में अधिक मानसिक स्वास्थ्य संकट की रिपोर्ट करती हैं। Shankland (2025)[16] के शोध में यह स्पष्ट होता है कि इसका एक प्रमुख कारण पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएँ हैं जो महिलाओं पर अतिरिक्त देखभाल का बोझ डालती हैं।

निष्कर्ष

मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट ने अपने समय में लिखा था कि महिलाओं को "तर्क की शिक्षा" दी जानी चाहिए ताकि वे "अपनी भावनाओं की दासी" न बनें। आज, दो शताब्दियों बाद, उनका यह संदेश उतना ही प्रासंगिक है।

महिलाओं की जिम्मेदारियाँ, लैंगिक भूमिका, और भावनात्मक श्रम ये तीनों एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। इन तीनों को अलग-अलग समझना संभव नहीं है। और इन तीनों से मुक्ति का एक ही मार्ग है: वह शिक्षा जो महिलाओं को यह पहचानने में सक्षम बनाए कि ये तीनों कोई प्राकृतिक नियति नहीं हैं, बल्कि एक सामाजिक संरचना है जिसे बदला जा सकता है।

वोलस्टोनक्राफ्ट की विरासत यह है कि उन्होंने हमें यह दिखाया कि व्यक्तिगत और राजनीतिक अलग नहीं हैं। महिलाओं का भावनात्मक बोझ व्यक्तिगत है, लेकिन इसके कारण संरचनात्मक हैं। लैंगिक भूमिकाएँ व्यक्तिगत हैं, लेकिन इनका निर्माण राजनीतिक है। जिम्मेदारियाँ व्यक्तिगत हैं, लेकिन इनका वितरण सामाजिक है। इन तीनों को बदलने के लिए हमें व्यक्तिगत उपचार से आगे बढ़कर संरचनात्मक परिवर्तन की माँग करनी होगी। यही वोलस्टोनक्राफ्ट की सबसे बड़ी शिक्षा है।

लैंगिक भूमिकाएँ महिलाओं पर एक अदृश्य, अथक और अवैतनिक भावनात्मक बोझ डालती हैं, जिसे 'महिलाओं की जिम्मेदारी' का नाम देकर सामान्य बना दिया गया है। यह व्यवस्था न केवल महिलाओं के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाती है, बल्कि पूरे समाज को असंतुलित और असमान बनाती है। इस बोझ को पहचानना, उसका नाम रखना, और उसे बाँटना आधुनिक, स्वस्थ और न्यायसंगत समाज की पहली सीढ़ी है।

सुझाव

महिलाओं की जिम्मेदारियाँ, लैंगिक भूमिका, और भावनात्मक श्रम इन तीनों की समस्याओं का समाधान इस प्रकार किया जा सकता है-

- ✓ जागरूकता की पहचान करना कि भावनात्मक बोझ एक वास्तविक श्रम है, न कि कोई 'जन्मजात गुण'।
- ✓ जिम्मेदारी का बंटवारा करना घर के सभी सदस्यों पति, बच्चे, बुजुर्ग को अपनी भावनाओं और घरेलू कामों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

- ✓ संवाद, परिवार में खुलकर बात करना कि किस पर क्या बोझ है, और उसे बाँटना।
- ✓ लड़कियों और लड़कों की परवरिश में समानता देना, लड़कों को भी भावनाओं को समझना और रसोई/सफाई सिखाना, लड़कियों को भी निर्णय लेना और आत्म-रक्षा सिखाना।
- ✓ नीतिगत बदलाव करना कार्यस्थल पर महिलाओं के लिए लचीले घंटे, पितृत्व अवकाश, और मानसिक स्वास्थ्य सुविधाएँ।

संदर्भ

बटलर, जे. (2006). *Gender trouble: Feminism and the subversion of identity*. Routledge.

डेमिंगर, ए. (2019). The cognitive dimension of household labor. *American Sociological Review, 84*(4), 609–633. https://doi.org/10.1177/0003122419859007

दास, पी. (2025). Contributions of Mary Wollstonecraft: Rethinking educational ideas and gender equality in the 21st century. *International Journal of Social Science and Humanities Research, 13*(3), 225–231.

डी बोउवार, एस. (2011). *The second sex* (सी. बोर्डे एवं एस. मालोवानी-चेवेलियर, अनुवादक). Vintage Books. (मूल कृति 1949 में प्रकाशित)

फेडेरिची, एस. (2012). *Revolution at point zero: Housework, reproduction, and feminist struggle*. PM Press.

फ्रेज़र, एन. (2016). Contradictions of capital and care. *New Left Review, 100*, 99–117.

फ्राइडन, बी. (1963). *The feminine mystique*. W. W. Norton.

फर्ग्यूसन, एम. (1992). *The man question: Visions of subjectivity in feminist theory*. University of California Press.

गिल, आर. (2007). *Gender and the media*. Polity Press.

गन्थर-कनाडा, डब्ल्यू. (2001). *Rebel writer: Mary Wollstonecraft and Enlightenment politics*. Northern Illinois University Press.

हॉक्सचाइल्ड, ए. आर. (1983). *The managed heart: Commercialization of human feeling*. University of California Press.

हुक्स, बी. (2000). *Feminist theory: From margin to center* (द्वितीय संस्करण). Pluto Press.

मोहंती, सी. टी. (2003). *Feminism without borders: Decolonizing theory, practicing solidarity*. Duke University Press.

ओकली, ए. (1974). *The sociology of housework*. Martin Robertson.

पावर, के. (2020). The COVID-19 pandemic has increased the care burden of women and families. *Sustainability: Science, Practice and Policy, 16*(1), 67–73. https://doi.org/10.1080/15487733.2020.1776561

रिजवे, सी. एल. (2011). *Framed by gender: How gender inequality persists in the modern world*. Oxford University Press.

रिसमैन, बी. जे. (2004). Gender as a social structure: Theory wrestling with activism. *Gender & Society, 18*(4), 429–450. https://doi.org/10.1177/0891243204265349

रूसो, जे.-जे. (1979). *Émile, or on education* (ए. ब्लूम, अनुवादक). Basic Books. (मूल कृति 1762 में प्रकाशित)

स्वामी, वी., एवं फर्नहम, ए. (2020). Body image and female mental health. In *The Palgrave handbook of women and mental health* (pp. 45–62). Palgrave Macmillan.

वॉल्स्टोनक्राफ्ट, एम. (1792). *A vindication of the rights of woman*. J. Johnson.